B.M.A COLLEGE , BAHERI,DARBHANGA
(A CONSTITUENT UNIT OF LNMU)
BA DEGREE-1
HISTORY HONS.
PAPER-1
UNIT-4(III)
SUB./GEN.
UNIT-2(IV)
DEPARTMENT OF HISTORY
PANKAJ KR.MISHRA
DATE-08/08/2020

TOPIC:- हर्षवर्धन का समकालीन प्रमुख राज्यों से संबंध ।

PART-5

Scanned with CamScanner

हर्ष का समकालीन प्रमुख राज्यों से संबंध

हर्षकालीन ऐतिहासिक साक्ष्यों से अन्य अनेक राजाओं के नाम भी मिलते हैं। इनमें से कुछ ने हर्ष की ही भांति स्वतंत्र राज्य की स्थापना का प्रयत्न किया था। साम्राज्य स्थापना की प्रतिद्वंदिता से कुछ को हर्ष के साथ युद्ध भी करने पड़े। कुछ ने बिना लड़े ही हर्ष के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित कर लिए। कुछ राज्यों ने वैवाहिक संबंध भी कायम किए। इनमें से कुछ ऐसे भी राज्य थे जिन्होंने हर्ष के सम्मुख अपनी स्वतंत्रता कायम रखी थी। इस प्रकार समकालीन राज्यों के साथ संबंध को हर्ष के राजनीतिक संबंधों तथा साम्राज्य स्थापनान्तर्गत एक विशेष उपलब्धि के रूप में देखा जा सकता है।

(1) कश्मीर के साथ — राजतरंगिणी से स्पष्ट होता है कि 601 ई० में दुर्लभवर्द्धन ने कश्मीर में कार्कोट वंश की स्थापना की। उन्होंने 637 ई० तक राज्य किया। अतः दुर्लभवर्द्धन हर्ष का समकालीन था। ह्वेनसांग के कथनानुसार हर्ष कश्मीर से बुद्ध का दाँत उठाकर लाया था। इससे संकेत मिलता है कि कश्मीर भी उसके प्रभाव में था।

(2) सिंध के साथ — ह्वेनसांग के कथनानुसार सिंध में एक शूद्र राजा राज करता था। सिंध का राजा हर्ष के प्रभाव में था।

(3) वातापी के चालुक्यों के साथ — पुलकेशिन द्वितीय चालुक्य, हर्ष का समकालीन था। वह महत्वाकांक्षी शासक था और साम्राज्य विस्तार नर्मदा के उत्तर में करना चाहता था। दूसरी तरफ हर्ष अपने साम्राज्य का विस्तार नर्मदा के दक्षिण में करना चाहता था। साम्राज्यवादी महत्वाकांक्षाओं की परिणति युद्ध में हुई। युद्ध में किसी जीत तथा किसकी हार हुई, साक्ष्यों से यह बहुत स्पष्ट नहीं हो पाता। किंतु यह स्पष्ट है कि हर्ष अपने साम्राज्य का विस्तार नर्मदा के दक्षिण में नहीं कर सका। इस प्रकार वातापी के चालुक्यों के साथ हर्ष का संबंध संघर्ष और युद्ध का रहा।

(4) वल्लभी के साथ — हर्ष का समकालीन वल्लभी शासक ध्रुवसेन द्वितीय था। उसके साथ हर्ष ने दंड एवं पुरस्कार की नीति अपनाई। वस्तुतः ध्रुवसेन द्वितीय चालुक्य शासक पुलकेशिन द्वितीय के प्रभाव में था। अतः हर्ष इस प्रभाव को समाप्त करने के लिए इसके विरुद्ध अभियान कर वल्लभी को पराजित किया और बाद में वैवाहिक संबंध कायम किया, अपनी पुत्री का विवाह ध्रुवसेन द्वितीय से कर के। नौसारी ताम्रपत्र में इस वैवाहिक संबंध का स्पष्ट उल्लेख है। इस प्रकार हर्ष ने वल्लभी के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध कायम कर अपनी राजनीतिक आवश्यकताओं की पूर्ति की।

(5) कामरूप के साथ — हर्ष का समकालीन कामरूप शासक भास्करवर्मन था। शशांक की साम्राज्यवादिता से अपनी रक्षा करने के लिए भास्करवर्मन ने हर्ष के साथ मित्रता करना श्रेयस्कर समझा। हर्ष भी शशांक के विरुद्ध युद्ध करना चाहता था और उसे एक ऐसे मित्र की तलाश थी, जो उसे इस अभियान में सहायता देता। फलतः उसने भास्करवर्मन के संधि प्रस्ताव को स्वीकार किया। इस द्विगज संधि से शशांक की स्थिति संकटमय हो गई। इस प्रकार हर्ष और कामरूप के बीच मैत्रीपूर्ण संबंध कायम हुए जिनका उद्देश्य राजनीतिक एवं कूटनीतिक था।

Scanned with CamScanner

6. बंगाल के साथ (गौड़) :— हर्ष का समकालीन गौड़ शासक शशांक था, जो उसका सर्वप्रमुख शत्रु था। इस शत्रुता का कारण यह था कि शशांक ने हर्ष के बड़े भाई राज्यवर्द्धन की हत्या कर दी और वर्धन वंश की प्रतिष्ठा को ठेस पहुँचाया। अतः राज्यारोहण के पश्चात् हर्ष ने इसके विरुद्ध अभियान किया। किन्तु शशांक के जीवित रहने तक हर्ष का गौड़ पर नियंत्रण नहीं हो सका। उसकी मृत्यु के बाद यह संभव हो सका। इस प्रकार हर्ष के समय बंगाल शत्रु राज्य के रूप में उपस्थित था और इसके साथ हर्ष ने युद्ध एवं संघर्ष की नीति अपनाई और अंततः बंगाल पर नियंत्रण स्थापित कर लिया।

Pankaj
03/08/2020

Scanned with CamScanner